मौसम मित्र

पर्यावरण एवं जलवायु के अधिकारों पर युवाओं की आवाज – मध्यप्रदेश

पर्यावरण वार्षिक अंक - 01 # मध्यप्रदेश, सन - 2023

युवा हो जिसका आधार,
हर मुश्किल होगी आसन !

मैं 22वर्ष का एक युवा हूँ जोकि लोकल टू ग्लोबल परियोजना से पिछले कुछ माह से जुड़ा हुआ हूँ और मध्यप्रदेश राज्य के भोपाल शहर का निवासी हूँ. वर्तमान में अपनी पोस्ट-ग्रेजुएशन कर रहा हूँ,मैं केवल एक छात्र नहीं हूँ; मेरे द्वारा बचपन संस्था के माध्यम से बच्चों के अधिकारों और सुरक्षा के लिए युवा समूह के साथ मिलकर सक्रिय भूमिका निभाई है। इसके अलावा पर्यावरण मित्र संस्था द्वारा नेतृत्व कर रहे स्थानीय से वैश्विक परियोजना के भोपाल कोर समिति के सदस्य के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस परियोजना में भाग लेने ने की जागरूकता को प्रदूषण के पर्यावरणीय प्रभावों की ओर बढ़ाया है, जो एक वैश्विक प्रदूषण महामारी के समान है। इस अनुभव से प्रेरित होकर, Harsh ने इसका संज्ञान लेते हुए अपने समुदाय में एक युवा समूह की स्थापना करने का पहल किया है। इस समूह का मुख्य उद्देश्य पर्यावरणीय मुद्दों और जलवायु परिवर्तन के बारे में जागरूकता बढ़ाना है, स्थानीय समस्याओं का सामना करने के लिए जो प्रदूषण में योगदान कर रहे हैं।

मुख्य योगदान :

1. **युवा समूह गठन:** समुदाय स्तर पर एक युवा समूह की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसमे कुल 20 सदस्य शामिल है और वे अपने समूह की प्रत्येक बैठक में हिस्सा देते है.

2. **समुदाय प्रेरणा:** समुदाय, जिसमें युवा समूह के सदस्य भी शामिल हैं, को प्रदूषण की रोकथाम में योगदान करने वाली गतिविधियों में लिए सक्रियता दिखाई गई।

3. **गौरया बचाओ अभियान :** इस अभियान के तहत युवा समूह के सदस्यों के साथ बैठकें आयोजित कीं ताकि पक्षियों की संरक्षण के उपायों की योजना बनाई जा सके, जिसमें आश्रय स्थापित करना शामिल है।

मेरे इस प्रयास ने न केवल उन्हें पर्यावरण संरक्षण के प्रति समर्पण को ही नहीं दिखाया है, बल्कि इनके माध्यम से स्थानीय और वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों को सामना करने में समुदाय की भूमिका को भी महत्वपूर्णता दी है।

पर्यावरण सुरक्षा के लिए मेरा संकल्प

मैं लोकल टू ग्लोबल परियोजना की कोर समिति का सदस्य हूं और मैं मध्यप्रदेश राज्य के भोपाल शहर का रहवासी हूं,इस परियोजना से बीते कुछ माह से जुड़ा हूं और इससे जुड़ कर मैंने कई कार्यशालाएं और गतिविधियों में हिस्सा लिया है जैसे की इस परियोजना से जुड़ने के बाद मेरे द्वारा लिए गए प्रशिक्षण व कार्यशाला !

पहली कार्यशाला जोकि जलवायु परिवर्तन से होने वाले वैश्विक परिणामों के प्रभाव से हो रहे नुकसानों को लेकर समझ को विकसित किया गया साथ ही समुदाय व अन्य युवा और बच्चों की समझ को विकसित करने हेतु हम किन उपकरणों व गीतिविधियों को शामिल कर समुदाय को जमीनी स्तर से सुधार की ओर कैसे लेजाएं इस पर आधारित थी जिसमे मुझे मध्यप्रदेश राज्य का प्रतिनिधित्व करने का मौका प्राप्त हुआ और पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन के मुद्दों को समझने की क्षमता का विकास हुआ।

इसी पहल के साथ जुड़ कर समुदाय और अन्य मेरे साथी समूह के युवाओं को भी मैंने पर्यावरण की रक्षा एवं सुरक्षा हेतु प्रेरित किया व उन्हें इसके प्रति और अन्य लोगो को जागरूक करने हेतु चुना, जिसके फलस्वरूप मेरे साथ आज 25 युवा साथी ऐसे है जो स्वयं से ही इस पहल में जुड़ कर अपने घर से पर्यावरण सुरक्षा के संदर्भ में अपने परिजनों की सोच को परिवर्तित कर उनमें बदलाव लाने में जुटे हुए है,

परियोजना द्वारा आयोजित की गई राज्य स्तरीय बैठकों में हिस्सा लिया गया और अपने क्षेत्र के पर्यावरणीय मुद्दों के सुधर हेतु योजना तैयार कर अपने समूह के साथियों को इन समस्याओं से लड़ने हेतु गतिविधियों से अवगत कराया साथ ही मुझे मध्य प्रदेश स्तरीय युवा समूह का अध्यक्ष भी निर्मित किया गया है और में अपने कार्यों और मेरे साथियों को इसी संदर्भ में आगे लेजाने हेतु प्रेरित कर रहा हूँ.

"मैं अपने लक्ष्य और संकल्प पर अडिग बना रहूँगा जब तक यह पूर्ण नहीं हो जाता"

मधुमखियाँ जीव जगत की महत्वपूर्ण कड़ियाँ

मधुमक्खी कीट वर्ग का महत्वपूर्ण जीव है जो कृषि तथा बागवानी फसलों का महत्वपूर्ण परागक हैं, ऐसा अनुमान लगाया गया है कि मानव आहार का एक तिहाई भाग परोक्ष रूप से मधुमक्खियों के परागण से ही प्राप्त होता है। परागण एक अनिवार्य पारिस्थितिक सेवा है जो वन्य पादप समुदायों के साथ-साथ कृषि की उत्पादकता को बनाए रखने की दृष्टि से भी बेहद ही महत्वपूर्ण है ।

मानव अस्तित्व को बचाए रखने के लिए इस महवपूर्ण जीव को हम नजरंदाज करके पर्यावरण बचाने के हमारे प्रयासों को पूर्ण नहीं मान सकते है । रॉयल ज्योग्राफिक सोसाइटी ऑफ लंदन की एक बैठक में अर्थवॉच इंस्टीट्यूट ने मधुमक्खी को इस ग्रह पर सबसे महत्वपूर्ण प्रजाति के रूप में घोषित किया है । इसके साथ ही यह परेशान करने वाली खबर भी आ रही है कि यदि मधुमक्खियों की संख्या इस धरती से निरंतर घटती गई तो मानव जाति बहुत जल्द खतरे की कगार पर खड़ी होगी। मधुमक्खियों का विलुप्त होना मानव जाति के लिए विनाशकारी होगा क्योंकि वे बिल्कुल भी इरिप्लेसेबल हैं। ज्ञातव्य हो की मधुमक्खिया पृथ्वी के सबसे पुराने जीव है जिनका अस्तित्व आदि काल से रहा है।

प्रतिवर्ष जीवो एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेको दिवस, सप्ताह, पखवाडा मनाये जाते है पर अहम् सवाल हम सभी के सामने है की की क्या हम सिर्फ दिवस को मनाकर अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण कर सकते है, संरक्षण की दिशा में किये गए जमीनी स्तर के निरंतर प्रयास ही इस दिशा में हमारे उद्देश्य को पूर्ण कर सकेगे ।

खाद्य सुरक्षा एवं जैवविविधता संरक्षण एवं पारिस्थिकीय सेवायो में इस जीव के महवपूर्ण योगदान को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है । अगर मानव जाति अपने सबसे लाभदायक जीव मधुमक्खियों के बारे में कुछ नहीं करती है तो वैज्ञानिकों और वन्यजीव विशेषज्ञों के अनुसार, "मधुमक्खियां को उन प्रजातियों की सूची में शामिल हो जायेंगी जो निकट भविष्य में विलुप्त होने के कगार पर हैं। "इस ग्रह पर मधुमक्खियों की 20,000 से परागणकों पर सीधे निर्भर रहने वाली वैश्विक फसलों की कुल कमाई मूल्य 235 बिलियन डॉलर से 577 बिलियन डॉलर प्रति वर्ष है। इसे प्रकृति का एक मुफ्त उपहार समझना चाहिए जो अब धीरे-धीरे गायब होने की कगार पर है। विषाक्त कीटनाशकों, विशेष रूप से न्यूरोटॉक्सिन और प्राकृतिक विकल्पों के उपयोग पर तत्काल प्रतिबंध लगाने की आवश्यकता है। कृषि में पोलिनेटर के अनुकूल व्यवहार एक जरूरी है।

इसके लिए किसानों को विशिष्ट फसलों के परागण की जरूरतों के बारे में पता होना चाहिए और उसके अनुसार कार्य करना चाहिए। वैश्वीकरण के कारण अन्य क्षेत्रों से कीटों और रोगजनकों के संचरण ने कुछ क्षेत्रों में मधुमक्खियों की आबादी को प्रभावित किया है। माना जा रहा है कि मोबाइल टेलीफोन द्वारा निर्मित तरंगों के कारण भी ये विलुप्त हो रहे हैं।

वनस्पतियों में परागण क्रिया: मधुमक्खियां पेड़ पौधों के पराग कणों को एक पौधों से दूसरे पौधों तक पहुंचाने में मदद करती हैं। जब मधुमक्खी किसी एक फूल पर बैठती है तो उसके पैरों और पंखों में पराग कण चिपक जाते हैं और जब यह उड़कर किसी दूसरे पौधे पर बैठती है, तब यह पराग कण उस पौधे में चले जाते हैं और उसे निषेचित कर देते हैं इससे फल और बीजों की उत्पत्ति होती है ।

भारतीय उपमहादीप में मधुमक्खियो की चार प्रजातियाँ मिलती है :

1. एपीस डोरसेटा: ऊँचे और खुले स्थानों में बनाना पसंद करती है सभी भारतीय मधुमक्खियो में यह आकर में बड़ी होती है ।
2. एपीस फ्लोरिया: यह भी खुले स्थानों में छत्ते का निर्माण करती है.
3. एपीस सेरेना: अन्य प्रचलित नाम सतपुड़ी, सतघरा, सतमुडी आदि स्थानीय नामो से भी जाना जाता है ।यह अंधरे में रहना पसंद करती है और यह एक से अधिक सामानांतर छत्तों का निर्माण पेड़ के कोटर, चट्टानों, मिट्टी के बमीठो, चट्टानो आदि में करती है ।
4. एपीस ट्राईगोना: यह डंक रहित मधुमक्खी है जिसे कोथी, कोतीयार आदि स्थानीय नामो से भी जाना जाता है यह मधुमक्खी पेड़ के कोटर दीवाल में अपना घर बनाती है ।

भारतीय प्रजाति की दो मधुमक्खियो का पालन हम कर सकते है जिसमे ऐपिस सेरेना जिसे सतपुड़ी कहते है और एपीस ट्राईगोना जिसे कोती मधुमक्खी कहते है यह एक डंक रहित मधुमक्खी है ।विज्ञान की भाषा में मधुमक्खी पालन को एपीकल्चर कहा जाता है ।

भी अधिक प्रजातियां है, जिनमे से सिर्फ 4 प्रकार की मधुमक्खियां ही शहद बना सकती है।

धुमक्खियो से से सम्बंधित कुछ रोचक तथ्य एवं जानकारी :

- ✓ मधुमक्खी का छत्ता मोम का बना होता है जो इनके पेट की ग्रंथियो (मोम ग्रंथियों) से निकलता है। इसमें छोटे छोटे छिद्र रूपी कोष बने होते है। फूल के रस को इन्ही कोषों में रखा जाता हैं। छत्ते में कुल 6 कोने होते है।
- ✓ मधुमक्खी के जीवन चक्र में चार अवस्थाये होती है: अंडा, लारवा, प्यूपा और व्यस्क
- ✓ शहद मे फ्रक्टोस की मात्रा अधिक होने की वजह से यह चीनी से भी 25% प्रतिशत अधिक मीठा होता है ।
- ✓ एक किलो शहद तैयार करने के लिए के लिए पूरे छत्ते की मधुमक्ख्यों को लगभग 40 लाख फूलो का रस चूसना पड़ता है
- ✓ एक किलो शहद के निर्माण के लिए करीब 20 हजार मधुमक्खियां पृथ्वी के 6 चक्कर लगाने के बराबर सफर तय कर लेती है ।
- ✓ 20 मई, 2018 को संपूर्ण विश्व में पहला 'विश्व मधुमक्खी दिवस' मनाया गया ।
- ✓ मधुमक्खी का परिवार :
- ✓ एक मधुमक्खी के परिवार में 20 हजार से लेकर 30 हजार तक मधुमक्खिया होती है जिसमे एक रानी कुछ 100-200 की संख्या में ड्रोन जिन्हें नर कहते है और शेष कामकाजी मधुमक्खिया होती है मधुमक्खियो में श्रम का बँटवारा कार्य के आधार रहता है ।
- ✓ रानी मधुमक्खी की उम्र 2-3 साल तक होती है
- ✓ रानी मधुमक्खी एक दिन में 200 से लेकर 500 तक अंडे देती है (पूरे जीवन पर्यन्त)

मधुमक्खीयो से होने वाले फायदे :

- ✓ परागण क्रिया: अधिकांश फसलो, फल एवं सब्जिया में क्रॉस परागण होता है जिससे कारण फूल से फल बनने की प्रक्रिया बढ़ जाती है ।
- ✓ शहद: प्राकृतिक शहद की प्राप्ति
- ✓ मोम: यह प्राकृतिक मोम है जो की सौन्दर्य प्रसाधन बनाने और पोलिश आदि करने में प्रयुन्क्त होता है ।
- ✓ पराग (पोलन): यह प्रोटीन का उत्तम स्रोत्र है ।
- ✓ प्रोपोलिस: न्यूरोलॉजिकल रोगों इसका प्रयोग होता है ।
- ✓ रॉयल जेली: हमारे इम्यून सिस्टम को मजबूत करने में मददगार होती है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है ।

मधुमक्खियो को खतरे व कुछ प्रमुख कारण:

- ✓ मधुमक्खी क्लोनियों से शहद निकालने की परंपरागत विधियों का उपयोग ((धुँआ/छाते काटकर एवं जलाकर)
- ✓ किसानों तथा जन-सामान्य में मधुमक्खियों सहित अन्य परागकों द्वारा निभाई जाने वाली उल्लेखनीय भूमिका के प्रति जागरूकता की कमी।
- ✓ खेती में कीटनाशकों का प्रयोग
- ✓ तापमान में बढ़ोतरी एवं मौसम चक्र में परिवर्तन
- ✓ प्राकृतिक आपदाएं तथा समय-समय पर वनों में आग लगना।
- ✓ भूमि उपयेाग में परिवर्तन, एकल फसलों की खेती
- ✓ देसी परागकों के संरक्षण की दिशा में न्यूनतम प्रयास ।
- ✓ वनों की अप्रत्याशित कटाई. (आनंद पटेल)

लोकल टू ग्लोबल, परियोजना के तहत जानकारी प्राप्त कर जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिए मध्यप्रदेश के युवा नेतृत्व करने लगे हैं !

PARYAVARAN MITRA

terre des hommes
Help for Children in Need

german cooperation
DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT

सहायक संपादक

फाल्गुनी जोशी : पर्यावरण मित्र
502, राज अवेन्यु, भाईकाकानगर रोड
थलतेज, अहमदाबाद- 380059
Phone No: 079-26851321
Email ID: paryavaranmitra@yahoo.com
Website: www.paryavaranmitra.org.in

केवल शैक्षिक उद्देश्य हेतु निजी प्रकाशन

संपादक

पंकज शर्मा : पर्यावरण मित्र
C/o बचपन संस्था, मध्य प्रदेश जिला भोपाल, 222, रोहित नगर बावडिया कलां, 462039, मो.न. 8269996657
Email – pankaj8269sharma@gmail.com